पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता

गुरु जाम्भोजी

(बाल-पोथी)

डॉ. बनवारी लाल सहू

जांभाणी साहित्य अकादमी

पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता

''गुरु जाम्भोजी''

लेखक : डॉ. बनवारी लाल सहू

© लेखकाधीन

द्वितीय संस्करण : 2013

प्रकाशक : जांभाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर–1, E-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, राजस्थान

ISBN : 978-93-83415-04-5

मूल्य : पन्द्रह रुपये मात्र

मुद्रक : साहित्य संस्थान गाजियाबाद

Paryavaran Sanrakshan Ke Praneta GURU JAMBHOJEE
by Dr. Banwari Lal Sahu

E-mail : jsakademi@gmail.com
Website : www.jambhani.com

दो शब्द

गुरु जाम्भोजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अत्यन्त विलक्षण एवं प्रभावशाली है। उनके समय में समाज की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। समाज जीवन के सही मार्ग से भटक गया था। लोग नशीले पदार्थों का प्रयोग करते थे एवं मांस खाते थे। इसी से समाज में जीव-हत्या अबाध गति से होती थी और विलासिता बढ़ती जा रही थी। अपवित्र खान-पान के कारण लोगों में नैतिक गुणों का अभाव हो रहा था। धर्म का रूप विकृत हो गया था और समाज के सामने उच्च आदर्श का अभाव था। लोग भौतिक सुख के लिए बेचैन थे और उसे प्राप्त करने के लिए अनैतिक प्रयास कर रहे थे। गुरु जाम्भोजी ने ऐसे ही भटके हुए लोगों को जीवन का सच्चा मार्ग दिखाया और उन्हें भौतिक जीवन को सुखपूर्वक जीने एवं मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्ति का सरल मार्ग बताया था। उन्होंने अपनी शिक्षा से समाज को नयी दिशा दी। लोगों को विभिन्न प्रकार के व्यसनों से मुक्ति दिलाकर, उन्हें लोकहित के कार्यों की ओर प्रेरित किया था। अपने विचारों और आदर्शों को व्यवहारिक रूप देने के उद्‌देश्य से उन्होंने बिश्नोई पंथ की स्थापना की थी।

आज का युग भौतिकवादी युग है, जिसमें भौतिक सुख के लिए आपा-धापी मची हुई है। अर्थ की प्रधानता के कारण मनुष्य की स्वार्थ भावना सर्वोपरि हो गई है। इससे मानवीय गुण लुप्त होते जा रहे हैं। समाज में हिंसा एवं कलह का वातावरण बन गया है। नशे की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है, जिससे समाज में अपराध बढ़ रहे हैं। मनुष्य की स्वार्थी भावना ने ही जाति एवं धर्म के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में दूरी बढ़ा दी है। इसी कारण मनुष्य की

सद्वृत्तियां निरन्तर कम होती जा रही है और मानव समाज में घृणा, अविश्वास, भ्रष्टाचार एवं बेईमानी जैसी बुराइयां बढ़ती जा रही है। विलासिता एवं स्वार्थ की भावना के कारण ही आज मानव समाज के सामने पर्यावरण-प्रदूषण की विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। इस समस्या ने मानव के अस्तित्व पर ही प्रश्न-चिन्ह लगा दिया है। आज मानव समाज जिन बुराइयों एवं समस्याओं से घिरा हुआ है, उन सबका व्यवहारिक एवं सरल समाधान गुरु जाम्भोजी की शिक्षा में निहित है। गुरु जाम्भोजी की शिक्षा को अपने जीवन में ढालकर आज का मानव नशा विरोधी, अहिंसा एवं पर्यावरण सम्बन्धी नीतियों को अपनाकर अपने सांसारिक जीवन को सुख एवं शान्ति से व्यतीत कर सके तथा मुत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त करने में सफल हो सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस बाल-पोथी की सृजना की गई है। बच्चे एवं युवा इस पोथी को पढ़कर गुरु जाम्भोजी की शिक्षा को अपने जीवन में ढालने के लिए प्रेरित हो सके, इसी में लेखक के परिश्रम की सार्थकता निहित है।

डॉ. बनवारी लाल सहू

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एन.एम. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन - 335513
5 मार्च, 2000

दूसरे संस्करण के विषय में

बाल वर्ग के लिए सरल, सहज व स्पष्ट भाषा में लिखी गई इस 'बाल पोथी' को पाठकों ने हाथों-हाथ लिया, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूं। पिछले काफी समय से स्टॉक समाप्त होने के कारण इस पोथी की मांग निरन्तर की जा रही थी। जांभाणी साहित्य अकादमी ने इसे प्रकाशित करने का निर्णय लिया है, जिसके लिए मैं अकादमी का धन्यवाद करता हूं। आशा है प्रथम संस्करण की भांति इसे भी पाठकों का स्नेह प्राप्त होगा।

डॉ. बनवारी लाल सहू

1/73, प्रोफेसर कालोनी
हनुमानगढ़ टाऊन (राजस्थान)
दिनांक : 22 सितम्बर, 2012
मो. 9414875029

गुरु जाम्भोजी का अवतार

राजस्थान में मरूभूमि का नागौर, नागौरी बैलों के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यह पहले एक परगना था और इस समय एक जिला है। नागौर से पच्चास किलोमीटर उत्तर में पीपासर नामक गांव है। यह गांव अत्यन्त प्राचीन है। पीपासर पहले की तरह आज भी रेत के टीलों से घिरा हुआ है। इसी गांव में किसी समय रोलोजी पंवार रहते थे। वे जाति से राजपूत थे और कृषि कार्य करते थे। रोलोजी पंवार के दो पुत्र एवं एक पुत्री थी। बड़े पुत्र का नाम लोहटजी एवं छोटे पुत्र का नाम पूल्होजी था। पुत्री का नाम तांतू देवी था। लोहटजी का विवाह हांसा देवी के साथ हुआ था। हांसा देवी छापर गांव के मोहकम सिंह भाटी की बेटी थी। तांतू देवी का विवाह फलोदी के पास ननेऊ गांव में हुआ था। कालान्तर में पूल्होजी ने लाडनूं गांव में रहना प्रारम्भ कर दिया था और लोहटजी पीपासर में ही रहते थे।

कृषि एवं पशुपालन लोहटजी का मुख्य व्यवसाय था। वे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और गांव के सबसे धनवान व्यक्ति थे। सज्जनता एवं धार्मिक प्रवृत्ति के कारण गांव के लोग उनका सम्मान करते थे। लोहटजी हर कठिन स्थिति में लोगों की सहायता के लिए तैयार रहते थे। भौतिक सुख के सभी साधन होने के उपरान्त भी लोहट जी सुखी नहीं थे क्योंकि उनके कोई सन्तान नहीं थी। इसी कारण वे प्राय: चिन्तित एवं दु:खी रहते थे। आयु बढ़ने के साथ-साथ ही उनकी यह चिन्ता एवं दु:ख भी बढ़ता जा रहा था।

वर्तमान की तरह ही उस समय भी मरूभूमि में भयंकर अकाल पड़ते थे। अकाल के समय लोग अपने गांव को छोड़कर, अपने पशुओं को साथ

लेकर दूसरे गांव जहां सुकाल होता था वहां चले जाया करते थे और सुकाल होने पर अपने गांव वापिस लौटते थे। इसी तरह का एक भयंकर अकाल सम्वत् 1507 में पीपासर में पड़ा था। उस अकाल से सभी लोग घबरा गए थे। गांव में चारे एवं पानी का अभाव हो गया था। अकाल में पशुधन का बचना कठिन हो रहा था। बहुत से लोग तो इधर-उधर चले गये थे। कुछ लोगों ने लोहटजी से कहीं चलने की प्रार्थना की। लोगों की प्रार्थना सुनकर लोहट जी ने द्रोणपुर चलने की योजना बनाई। द्रोणपुर में उस समय अच्छी वर्षा हो चुकी थी। सभी तालाब जल से भर गये थे और पशुओं के लिए पर्याप्त घास हो गई थी। इस तरह गांव के पशुधन को बचाने के उद्देश्य से लोहटजी इच्छुक व्यक्तियों एवं पशुओं को अपने साथ लेकर द्रोणपुर पहुंचे।

द्रोणपुर में रहते हुए लोहटजी को कई दिन व्यतीत हो गये थे। इसी बीच वहां और भी वर्षा हो गई। द्रोणपुर के सभी लोग फसल बोने की तैयारी करने लगे। उसी समय एक दिन द्रोणपुर का जोधा जाट हलौतिया (खेती का प्रारम्भ) करने के लिए घर से रवाना हुआ। गांव से बाहर निकलते ही उन्हें सामने से लोहटजी आते हुए दिखायी दिये। लोहट जी को देखकर जोधा जाट ने अपने मन में सोचा कि सामने से निपूता आ रहा है। इस समय निपूते व्यक्ति का मिलना बहुत ही अपशकुन है। खेत में बीज डालना व्यर्थ है। यही सोचकर जोधा जाट ने अपनी बैलगाड़ी वापस मोड़ ली। लोहटजी ने पास आकर जोधा जाट से गाड़ी वापस मोड़ने का कारण पूछा। इस पर जोधा जाट ने कहा कि 'निपूते के दर्शन हो गये हैं, इसलिए इस वर्ष खेतों में अनाज का एक दाना भी नहीं होगा और भयंकर अकाल पड़ेगा।' यह कहकर जोधा जाट अपने घर को रवाना हो गया। लोहटजी वहीं खड़े-खड़े सोचने लगे कि उनका जीवन कितना निरर्थक है। कोई उनके दर्शन भी नहीं करना चाहता। इसी तरह अपने मन में दु:खी होकर उन्होंने घने जंगल में जाकर तपस्या प्रारम्भ कर दी। यहां तक कि उन्होंने अन्न-जल ग्रहण करना भी बन्द कर दिया। उनकी तपस्या से प्रभावित होकर भगवान ने उन्हें दर्शन दिये। उसी समय भगवान ने लोहटजी को पुत्र

प्राप्ति का आशीर्वाद दिया और कहा कि वे स्वयं ही उनके घर पुत्र रूप में अवतरित होंगे। उसी समय भगवान नें योगी के रूप में हांसा को दर्शन दिये। भगवान ने हांसा को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे पुत्र होगा, जो महान योगी व अवधूत होगा। इसी आशीर्वाद के परिणाम स्वरूप पीपासर में सम्वत् 1508 की भादो वदि अष्टमी सोमवार को लोहट जी के घर गुरु जाम्भोजी का अवतार हुआ। गुरु जाम्भोजी के पिता का नाम लोहटजी एवं माता का नाम हांसा देवी था। हांसा देवी का दूसरा नाम केसर भी प्रचलित रहा है।

गुरु जाम्भोजी के सम्पूर्ण जीवन को चार कालों में बांटा गया है :-

1. बाललीला-काल
2. पशुचारण-काल
3. पंथ-प्रवर्त्तन-काल
4. ज्ञानोपदेश-काल

इस तरह गुरु जाम्भोजी ने सात वर्ष बाल लीला में बिताए। सताईस वर्ष तक पशु चराए और चौंतीस वर्ष की अवस्था में बिश्नोई पंथ का प्रवर्त्तन किया। पंथ प्रवर्त्तन से लेकर बैकुण्ठवास तक के इक्यावन वर्ष गुरु जाम्भोजी के ज्ञानोपदेश में ही व्यतीत हुए।

-0-0-0-

बाल लीला–काल

गुरु जाम्भोजी सामान्य मनुष्य नहीं थे। वे तो साक्षात् ईश्वर थे। इसलिए गुरु जाम्भोजी ने जन्म से ही अपनी अलौकिक शक्ति का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया था। जन्म के बाद गांव की कोई भी स्त्री बालक को जन्म घूंटी देने में सफल नहीं हो सकी। जैसे ही स्त्रियां बालक को जन्म घूंटी पिलाने लगी, वैसे ही उन्हें बालक के कई मुख दिखाई देने लगे। इससे वहां उपस्थित सभी स्त्रियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे कुछ भी खाते–पीते नहीं थे। उनकी छाया भी दिखाई नहीं देती थी। सामान्य बालक की तरह गुरु जाम्भोजी शारीरिक आवश्यकताओं के अधीन नहीं थे। उनके दूध न पीने से उनके माता–पिता बड़े चिन्तित रहते थे। अपनी इस चिन्ता को वे लोगों पर भी प्रकट करते रहते थे और कहते थे कि बालक कमजोर होता जा रहा है। एक बार पालने में सोये हुए बालक को जब उनकी बुआ तांतू गोदी में लेने लगी, तो उठा नहीं सकी। इस पर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने हांसादेवी को बुलाकर कहा कि बालक बहुत भारी हो गया है, वह उठाया ही नहीं जा रहा है। इस पर हांसा ने भी बालक को गोदी में लेने का प्रयास किया तो वह भी सफल नहीं हो सकी। तभी वहां लोहटजी भी आ गये उन्होंने भी बालक को उठाना चाहा, तो वे भी बालक को उठा नहीं सके किन्तु घर की नौकरानी ने बालक को उठा लिया। इस पर सबको बहुत आश्चर्य हुआ। बाद में सबने बारी–बारी से बालक को गोदी में लेकर देखा, तो बालक बहुत ही हल्का था।

गुरु जाम्भोजी अपने माता–पिता के इकलौते पुत्र थे। वे उनकी वृद्धा अवस्था में पैदा हुए थे। इसी कारण उनके माता–पिता एवं अन्य संबंधियों का

उनके प्रति विशेष स्नेह था। गुरु जाम्भोजी का उठना-बैठना, खाना-पीना, खेलना-कूदना सामान्य बालक की तरह नहीं था। वे बहुत कम बोलते थे और अपने में ही लीन रहते थे। इससे उनके माता-पिता की चिन्ता भी बढ़ने लगी। उन्होंने बालक के उपचार के लिए कई लोगों से पूछताछ की। उस समय नागौर में खेमनराय नाम का एक शमशान सेवी तांत्रिक ब्राह्मण रहता था। उसे लोग गुरु जाम्भोजी के उपचार के लिए लोहटजी के पास लाये। लोहटजी ने तांत्रिक ब्राह्मण से कहा कि यदि तुम बालक को ठीक कर दोगे, तो बदले में मैं तुम्हें धन और गाय दूंगा।

तांत्रिक ने गुरु जाम्भोजी के उपचार के लिए अनेक प्रपंच किये, पर उसे सफलता नहीं मिली। तब तांत्रिक ने कहा कि यदि मेरे दीप प्रज्जवलित हो जायें, तो मैं बालक का उपचार कर सकता हूं। उसकी इस बात को सुनकर गुरु जाम्भोजी ने कच्चे सूत के धागे से, कच्चे घड़े द्वारा कुएं से पानी निकाला। उस पानी को गुरु जाम्भोजी ने दीयों में डाला और उन्हें प्रज्जवलित किया। इससे सबको बहुत आश्चर्य हुआ। उस ब्राह्मण ने तो गुरु जाम्भोजी के चरण ही पकड़ लिए। तब गुरु जाम्भोजी ने वहां उपस्थित लोगों एवं ब्राह्मण को समझाते हुए प्रथम सबद कहा। उस समय गुरु जाम्भोजी की आयु सात वर्ष की थी।

-0-0-0-

पशुचारण–काल

लोहटजी के घर में गाय आदि बहुत से पशु थे। इन पशुओं को लोहटजी ही जंगल में चराते थे परन्तु जब लोहट जी वृद्ध हो गये तो उन्होंने पशु चराने का काम जाम्भोजी को सौंप दिया। पिता की आज्ञानुसार गुरु जाम्भोजी छोटी अवस्था में ही अपने साथी ग्वालों के साथ जंगल में पशु चराने लग गये। वे अपने पशुओं को बहुत ही प्रेम से चराते थे। इससे पशु भी उनसे प्रेम करने लग गये। वे स्वयं रेत के टीले पर बैठे रहते और पशु उनकी आज्ञा मानकर निश्चित स्थान पर चरते रहते थे। पशु चराते समय गुरु जाम्भोजी के कार्यों से उनके साथी ग्वाले उनकी ओर बहुत आकर्षित हो गये थे। दूसरे लोगों को भी वे अपनी शक्ति एवं कार्यों से प्रभावित करते रहते थे। पशु चराते समय ही गुरु जाम्भोजी ने अपने साथियों के कहने पर ऊधरण कान्हावत की सांढे डाकुओं से छुड़वाई थी। अपनी सांढे पाकर ऊधरण कान्हावत गुरु जाम्भोजी से बहुत प्रभावित हो गया था। बाद में उसने गुरु जाम्भोजी से चार प्रश्न भी पूछे थे। चारों प्रश्नों के जवाब में गुरु जाम्भोजी ने ऊधरण कान्हावत को सम्बोधित करके चार 'सबद' कहे थे।

उन्हीं दिनों मेड़ता के राव दूदा से उनका राज्य छीन लिया था। वे अपनी शक्ति बढ़ाकर, अपने खोये हुए राज्य को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे। तभी उनकी भेंट पीपासर गांव के कुएं के पास गुरु जाम्भोजी से हुई। राव दूदा अपने साथियों के साथ विश्राम के लिए पीपासर गांव के कुएं के पास ही वृक्ष के नीचे ठहरे हुए थे। उसी समय गुरु जाम्भोजी अपने पशुओं को लेकर

वहां पहुंचे। गुरु जाम्भोजी जिन-जिन पशुओं को आज्ञा देते, केवल वे ही पशु कुएं की खेली से पानी पीकर आते। गुरु जाम्भोजी की इस शक्ति को देखकर राव दूदा को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे उनसे प्रभावित हो गये। वहीं राव दूदा ने गुरु जाम्भोजी से मेड़ते को प्राप्त करने के लिए सहायता की प्रार्थना की। राव दूदा की प्रार्थना पर गुरु जाम्भोजी ने उन्हें एक काठ-मूठ की तलवार दी और मेड़ता प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया। उनके आशीर्वाद से राव दूदा मेड़ते को पुनः प्राप्त करने में सफल हो गये। यह घटना सम्वत् 1519 की है। इसी तरह जोधपुर के राव जोधाजी की प्रार्थना पर सम्वत् 1526 में उन्होंने उन्हें बैरिसाल नगाड़ा दिया। इसी नगाड़े को बाद में बीकानेर के राव बीकाजी ने जोधपुर पर चढ़ाई करके प्राप्त किया था। यही नगाड़ा आज बीकानेर के जूनागढ़ में लोगों के दर्शनों के लिए रखा हुआ है।

शिक्षा-दीक्षा

गुरु जाम्भोजी ने कभी भी किसी पाठशाला में किसी गुरु से शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। यद्यपि उनके माता-पिता ने उन्हें पढ़ाने का प्रयास किया था पर उनके दिव्य ज्ञान को जानकर कोई भी गुरु उन्हें शिक्षित करने का साहस नहीं कर सका। गुरु जाम्भोजी शिक्षा पाने के योग्य हुए तो लोहटजी ने एक ब्राह्मण को घर पर बुलाया। लोहटजी ने विद्वान ब्राह्मण को विभिन्न वस्तुएं भेंट करके, गुरु जाम्भोजी की पाटी पुजवाई। इसके बाद जब ब्राह्मण ने गुरु जाम्भोजी से अक्षर लिखवाने के लिए उनका हाथ पकड़ना चाहा, तो ब्राह्मण को लगा कि उनका हाथ गुरु जाम्भोजी के हाथ पर न पड़कर, खाली स्थान पर पड़ रहा है। बाद में जब उन्होंने आश्चर्य से गुरु जाम्भोजी की ओर देखा, तो उन्हें गुरु जाम्भोजी का चार भुजा एवं चार मुख वाला अलौकिक रूप दिखाई दिया।

इससे ब्राह्मण ने समझ लिया कि यह बालक साधारण नहीं है। सर्वज्ञाता को भला कौन शिक्षा दे सकता है ? गुरु जाम्भोजी ने चाहे किसी से भी शिक्षा ग्रहण न की हो पर उन्हें सब बातों का पूर्ण ज्ञान था। इस तथ्य को गुरु जाम्भोजी ने अपने एक 'सबद' में भी स्वीकार किया है।

गुरु जाम्भोजी का गृह-त्याग

प्रत्येक माता-पिता की तरह गुरु जाम्भोजी के माता-पिता भी उनका विवाह करना चाहते थे पर गुरु जाम्भोजी विवाह के बन्धन में नहीं बन्धना चाहते थे। उन्होंने अपने मन में आजीवन विवाह न करने का निश्चय कर रखा था। उनके इस दृढ़ निश्चय के सामने उनके माता-पिता उनका विवाह करने में सफल नहीं हो सके। सम्वत् 1540 की चैत सुदि नवमी को लोहटजी का स्वर्गवास हो गया। पांच माह बाद ही भादो की पूर्णिमा को हांसा देवी का स्वर्गवास हो गया। अपने माता-पिता के स्वर्गवास होने के बाद गुरु जाम्भोजी को पैतृक घर के प्रति कोई मोह नहीं रहा। उन्होंने सारी पैतृक सम्पत्ति गरीबों को बांट दी। सम्पत्ति बांटने के बाद उन्हें पीपासर से भी कोई मोह नहीं रहा। इसलिए वे पीपासर को छोड़कर, उससे उत्तर की तरफ नौ किलोमीटर दूर सम्भराथळ पर रहने लग गये। बाद में यही धोरा गुरु जाम्भोजी का स्थायी निवास रहा है। धोरे पर वे बिना किसी मकान के, एक हरी कंकेड़ी के नीचे रहकर लोगों को ज्ञान का प्रकाश देते रहते थे। आवश्यकता पड़ने पर वे लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए अपने शिष्यों के साथ दूर-दूर तक भी जाया करते थे।

---000---

पंथ–प्रवर्त्तन–काल

बिश्नोई पंथ का प्रवर्तन

गुरु जाम्भोजी की शक्ति एवं त्याग को देखकर लोग अपने कष्टों को दूर करने के लिए उनके पास सम्भराथल पर आने लगे। कुछ लोग उनके पास शंका–समाधान के लिए भी आते थे। गुरु जाम्भोजी के पास आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सन्तुष्ट होकर ही घर लौटता था। इससे उनकी प्रसिद्धि फैलने लगी और उनके पास आने वालों की संख्या बढ़ती रही। सम्भराथळ पर रहते हुए गुरु जाम्भोजी को अभी थोड़ा ही समय हुआ था कि सम्वत् 1542 में इस क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा। लोगों के पास अन्न–पानी एवं चारे का अभाव हो गया था। पशुधन का बचना कठिन हो रहा था। तब लोग विवश होकर, अपने पशुओं को साथ लेकर दूसरे स्थानों पर जाने लगे। उस समय इस क्षेत्र में वैसे भी आबादी कम थी। उनमें से भी बड़ी संख्या में जब लोग यहां से जाने लगे, तो गुरु जाम्भोजी को चिन्ता हुई। तब गुरु जाम्भोजी ने लोगों को दूसरे स्थान पर जाने से रोका तथा अपनी अलौकिक शक्ति द्वारा उनकी अन्न–धन से सहायता की। गुरु जाम्भोजी से सहायता पाकर तथा उनके उपदेश सुनकर लोग बहुत प्रसन्न हो गये। इससे लोगों का अकाल का समय आराम से व्यतीत हो गया। कुछ माह बाद वहां अच्छी वर्षा हो गई। लोगों ने अपने–अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की। तभी गुरु जाम्भोजी ने जन कल्याण के उद्देश्य से बिश्नोई पंथ प्रारम्भ करने का निश्चय किया। उन्होंने सम्वत् 1542 में कार्तिक वदि अष्टमी को सम्भराथळ धोरे पर कलश की स्थापना करके, पाहळ देकर तथा उन्नतीस नियमों की आचार संहिता द्वारा बिश्नोई पंथ का प्रवर्तन किया। कहते हैं कि

सबसे पहले गुरु जाम्भोजी के चाचा पूल्होजी ने बिश्नोई पंथ स्वीकार किया था। बिना किसी भेदभाव के जाट, राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, आदि अनेक जातियों के लोग पाहळ ग्रहण करके बिश्नोई पंथ में शामिल हो गये। उस समय समाज में जाति की दृष्टि से बहुत भेदभाव था। इसीलिए लोगों को गुरु जाम्भोजी द्वारा जातिगत बन्धन को तोड़ने पर बड़ा आश्चर्य एवं सुख की अनुभूति हुई। बिश्नोई पंथ में सम्मिलित होने का यह कार्य अष्टमी से लेकर अमावस्या तक चलता रहा। बाद में भी लोग समय-समय पर इस पंथ को स्वीकार करते रहे हैं। वास्तव में यह पंथ किसी जाति विशेष के लिए न होकर मानव-मात्र के लिए है। इसी कारण इसमें अनेक जातियों के लोग सम्मिलित होते रहे हैं, जिससे इस पंथ का क्षेत्र गुरु जाम्भोजी के जीवन काल में ही बहुत विस्तृत हो गया था।

उनतीस नियम

गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई पंथ के लिए उनतीस नियमों की व्यवस्था की है। इन नियमों का पालन करने वाला किसी भी जाति का अमीर-गरीब, ऊंच-नीच कोई भी मनुष्य पाहळ ग्रहण करके बिश्नोई हो सकता था। यही कारण है कि बिश्नोई पंथ के प्रारम्भ होने पर इसमें प्राय: सभी जातियों के लोग सम्मिलित हो गये थे। गुरु जाम्भोजी ने पवित्रता, नशीले पदार्थों का निषेध, अहिंसा, सदाचार एवं उपासना से संबंधित उनतीस नियम किसी जाति विशेष के लिए न बनाकर, मानव मात्र के लिए बनाये हैं। इन नियमों का पालन करके कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सकता है। वास्तव में ये नियम पूर्ण वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक हैं। भौतिक जीवन को युक्ति पूर्वक जीने और मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त करने के उद्देश्य से ही इन नियमों की व्यवस्था की गई

है। इसी कारण ये नियम जितने गुरु जाम्भोजी के समय में उपयोगी थे, उतने ही आज हैं और आगे भी रहेंगे।

गुरु जाम्भोजी द्वारा बताये गये उनतीस नियम इस प्रकार हैं :-

1. तीस दिन तक जच्चा गृह का कोई भी कार्य न करे।
2. पांच दिन तक रजस्वला स्त्री गृहकार्य से पृथक रहे।
3. प्रात:काल स्नान करें।
4. प्रात:-सायं सन्ध्या वंदना करें।
5. सन्ध्या को आरती एवं हरिगुण गान करें।
6. प्रेम पूर्वक हवन करें।
7. अमावस्या का व्रत रखें।
8. बाहरी एवं आन्तरिक पवित्रता रखें।
9. शील का पालन करें।
10. सन्तोष धारण करें।
11. रसोई अपने हाथों से बनायें।
12. थाट अमर रखें।
13. काम, क्रोध, लोभ एवं मोह आदि को अपने वश में रखें।
14. क्षमावान रहें।
15. प्राणी मात्र पर दया करें।
16. पानी, वाणी, ईंधन एवं दूध को छानकर प्रयोग करें।
17. विष्णु का जप करें।
18. चोरी न करें।

19. निंदा न करें।
20. झूठ न बोलें।
21. वाद-विवाद न करें।
22. हरे वृक्ष न काटें।
23. बैल को खसी (नपुंसक) न करवायें।
24. अमल न खावें।
25. भांग न पीवें।
26. तम्बाकू का सेवन न करें।
27. मांस न खावें।
28. मदिरा न पीवें।
29. नीले वस्त्र का प्रयोग न करें।

-0-0-0-

विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी।
विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं।।

(सबदवाणी - 67)

हे प्राणी ! तू विष्णु-विष्णु का जप कर। विष्णु के जप करने के अनन्त गुण हैं।

ज्ञानोपदेश–काल

गुरु जाम्भोजी प्राणी मात्र का भला करना चाहते थे। इसी उद्देश्य के लिए वे लोगों को उत्तम कर्म करने और विष्णु जप का उपदेश देते रहे हैं। बिश्नोई पंथ के प्रवर्तन के बाद से गुरु जाम्भोजी मुख्य रूप से यही कार्य करते रहे हैं। गुरु जाम्भोजी के उपदेशों, उनकी शक्ति एवं गुणों से प्रभावित होकर जन–साधारण के साथ–साथ समाज के प्रमुख व्यक्ति एवं राजा–महाराजा भी उनके पास उपदेश सुनने और शंका–समाधान के लिए आने लग गये। गुरु जाम्भोजी की बातों से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने परोपकार का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। दिल्ली के सिकन्दर लोदी, नागौर के मुहम्मद खां नागौरी, मेड़ता के राव दूदा, जैसलमेर के रावल जैतसी एवं मेड़ता के राणा सांगा आदि राजा–महाराजा गुरु जाम्भोजी के उपदेशों से प्रभावित हुए थे। इन राजा महाराजाओं ने गुरु जाम्भोजी के कहने से लोकहित के कार्य करने प्रारम्भ कर दिये थे।

वैसे गुरु जाम्भोजी स्थायी रूप से समराथळ धोरे पर ही रहते थे। यही धोरा उनकी तपस्या स्थल और यही उनका उपदेश स्थल रहा है। कभी–कभी वे अपने शिष्यों के साथ दूर–दूर तक भ्रमण करने के लिए भी जाया करते थे। इसी से उनका भ्रमण–क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया था। भ्रमण के समय में भी गुरु जाम्भोजी भटके हुए लोगों को जीवन का सही रास्ता बताते रहे हैं। गुरु जाम्भोजी के उपदेश देने का ढंग बहुत निराला रहा है।

उन्होंने अपने धर्म के प्रचार के लिए या अपने अनुयायियों की संख्या में वृद्धि करने के उद्देश्य से कभी भी कोई उपदेश नहीं दिया था। गुरु जाम्भोजी तो केवल अपने पास आने वालों की समस्याओं तथा शंकाओं को हल करते रहे हैं। शंका– समाधान के समय गुरु जाम्भोजी ने भौतिक जीवन के सुख एवं मोक्ष

प्राप्ति के सही तथा व्यवहारिक रास्ते की ओर भी संकेत किया है।

गुरु जाम्भोजी के उपदेशों को सुनकर असंख्य लोग प्रभावित हुए थे। उन सबका यहां वर्णन करना संभव नहीं है। गुरु जाम्भोजी के उपदेशों से प्रभावित होकर लोक कल्याण के रास्ते पर चलने वाले कुछ प्रमुख व्यक्तियों का ही यहां वर्णन किया जा रहा है।

ऊदोजी नैण एवं कुलचन्दराय को उपदेश :

नागौर के पास मांगलोद गांव में देवी माता का एक मन्दिर है। ऊदो जी नैण इसी मन्दिर के पुजारी थे। देवी माता के दर्शन हेतु मन्दिर में अनेक जातरी आते थे। एक बार बिजनौर निवासी सेठ कुलचन्द भी कुछ यात्रियों के साथ रात्रि- विश्राम के लिए मन्दिर के पास ठहर गये थे। ऊदोजी ने सेठ कुलचन्द एवं उनके साथियों से पूछा - आप कौन हैं और कहां जा रहे हैं ?

कुलचन्द : हम बिश्नोई हैं और मोक्ष-प्राप्ति हेतु गुरु जाम्भोजी के पास उपदेश सुनने जा रहे हैं।

ऊदो जी : मोक्ष तो माता भी दिला सकती है। इसके लिए इतनी दूर क्यों जा रहे हो ?

कुलचन्द : तुम जिस माता की पूजा कर रहे हो, वह तो केवल सांसारिक कष्टों को ही दूर कर सकती है - मोक्ष नहीं दिला सकती।

पूजा अर्चना के बाद ऊदोजी को भी माता की वास्तविक शक्ति का ज्ञान हो गया। रात्रि में बिश्नोइयों ने वहां साखियां भी गायी। ऊदोजी ने साखियों को बड़े ध्यान से सुना। इससे उनकी विचारधारा ही बदल गयी। इसी कारण वे प्रातःकाल होते ही गुरु जाम्भोजी के दर्शन हेतु बिश्नोइयों के साथ रवाना हो गये। सम्भराथळ पहुंचते ही गुरु जाम्भोजी ने सर्वप्रथम ऊदोजी से कहा - आओ ऊदा! अपने नाम को सुनते ही ऊदोजी गुरु जाम्भोजी के चरणों में गिर पड़े। उसी समय गुरु जाम्भोजी ने ऊदोजी

से कोई भजन-साखी सुनाने के लिए कहा। इस पर ऊदोजी ने कहा कि उसे कोई भजन आदि याद नहीं है। तब गुरु जाम्भोजी ने ऊदोजी को एक 'सबद' (97) द्वारा उपदेश दिया और साथ ही आशीर्वाद भी दिया। गुरु जाम्भोजी के आशीर्वाद से ऊदोजी के ज्ञान-चक्षु खुल गये। उसी समय ऊदोजी ने गुरु जाम्भोजी के गुणों से संबंधित एक साखी सुनाई। वे उसी समय पंथ में दीक्षित हो गये। तभी से ऊदोजी साखी एवं हरजस छन्द आदि कथन करने लग गये, जिससे वे समाज के महान कवि बन गये।

कुलचन्द अग्रवाल बिजनौर, उत्तरप्रदेश गंगापार के निवासी थे। चालीस वर्ष की आयु तक उनके कोई सन्तान नहीं थी। किसी के कहने पर वे अपनी पत्नी के साथ गुरु जाम्भोजी के दर्शन करने हेतु सम्भराथळ पहुंचे। वहां वे पाहळ लेकर बिश्नोई बन गये। गुरु जाम्भोजी के आशीर्वाद से उनके चार सन्तान हुई। उसके बाद वे कई बार गुरु जाम्भोजी के पास उपदेश सुनने के लिए आते थे। कुलचन्द ने ही सम्भराथळ पर एक भवन बनाने की प्रार्थना की थी। इस पर गुरु जाम्भोजी ने उसे एक 'सबद' (80) द्वारा उपदेश देकर समझाया था। गुरु जाम्भोजी अपने अन्तिम भ्रमण में बिजनौर भी गये थे। बिजनौर में कुलचन्द एवं अन्य बिश्नोइयों ने गुरु जाम्भोजी का स्वागत किया था। कहते हैं कि गुरु जाम्भोजी के बैकुण्ठवास के बाद कुलचन्दराय ने स्वेच्छा से अपने प्राण त्याग दिये थे।

जोधपुर के राव सांतल एवं अजमेर के मल्लूखां को उपदेश देना और मल्लूखां से गो-हत्या बन्द करवाना :

मल्लूखां अजमेर के सूबेदार थे। एक बार उन्होंने टोडा के नेतसी सोलंकी को बंदी बना लिया था। सोलंकी जोधपुर के राव सांतल का भानजा था। सोलंकी के बंदी होने के समाचार को सुनकर राव सांतल ने अजमेर पर चढ़ाई कर दी। वे अपनी सेना को लेकर अजमेर के निकट ही थांवला गांव के पास ठहर गये। उन

दिनों गुरु जाम्भोजी भी अपने शिष्यों के साथ वहां ठहरे हुए थे। राव सांतल भी वहीं पहुंच गये। उन्होंने गुरु जाम्भोजी से नेतसी को छुड़वाने की प्रार्थना की। तभी वहां मल्लूखां भी आ गया। गुरु जाम्भोजी के कहने पर मल्लूखां ने नेतसी को छोड़ दिया। इस तरह गुरु जाम्भोजी के प्रभाव से वह युद्ध टल गया और अनेक लोगों के प्राण बच गये। वहीं गुरु जाम्भोजी ने मल्लूखां को सम्बोधित करके चार 'सबदों' द्वारा उपदेश दिया था। गुरु जाम्भोजी के उपदेशों से प्रभावित होकर मल्लूखां ने गो-हत्या बंद करवा दी और स्वयं ने भी मांस खाना छोड़ दिया था। उस समय गुरु जाम्भोजी ने कुछ 'सबदों' द्वारा राव सांतल को भी जीवन का सही रास्ता बताया था। वहीं गुरु जाम्भोजी ने राठौड़ों के पुरोहित मूला को एक 'सबद' द्वारा मोक्ष प्राप्ति का सरल रास्ता बताया था।

हिन्दुओं के देव एवं मुसलमानों के पीर :

गुरु जाम्भोजी के समय में नागौर के शासक मुहम्मद खां नागौरी थे और बीकानेर के राव लूणकरण थे। ये दोनों गुरु जाम्भोजी के उपदेशों से बहुत प्रभावित थे। इन दोनों की समस्याओं का हल गुरु जाम्भोजी ने किया था। इसी कारण वे गुरु जाम्भोजी के बताये हुए रास्ते पर चलने लग गये थे। मुहम्मदखां का यह कहना था कि गुरु जाम्भोजी मुसलमानों के पीर हैं और लूणकरण का यह मानना था कि गुरु जाम्भोजी हिन्दुओं के देव हैं। इसी बात के फैसले के लिए दोनों शासकों के काजी एवं पंडित गुरु जाम्भोजी के पास गये थे। गुरु जाम्भोजी ने उन्हें बताया था कि वे सच्चे हिन्दुओं के देव और सच्चे मुसलमानों के पीर हैं।

बीदा को उपदेश देना एवं मोती को छुड़वाना :

द्रोणपुर राव बीदा जोधावत के अधिकार में था। उस समय द्रोणपुर में ही मोती मेघवाल रहता था। वह गुरु जाम्भोजी का भक्त था पर बीदा गुरु जाम्भोजी को नहीं मानता था। गुरु जाम्भोजी की शक्ति की परीक्षा लेने हेतु ही उसने मोती

मेघवाल को बंदी बना लिया था। अपने भक्त पर आए संकट को देखकर गुरु जाम्भोजी सम्भराथळ से द्रोणपुर के पास एक धोरे पर पहुंचे। गुरु जाम्भोजी को आया जानकर बीदा भी वहां पहुंच गया। गुरु जाम्भोजी के दर्शन करते ही बीदा उनके व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि उसके मन में गुरु जाम्भोजी के अपमान करने की जो इच्छा थी, वह समाप्त हो गई। बीदा के कहने पर गुरु जाम्भोजी ने उसे तीन परचे दिखाये। इसके साथ ही बीदा के कहने पर ही गुरु जाम्भोजी ने बीदा के आदमियों को अलग-अलग स्थानों पर अपना एक ही रूप दिखाया। इस पर बीदा ने अपनी भूल स्वीकार की और गुरु जाम्भोजी से क्षमा याचना की। उसने उसी समय मोती मेघवाल को छोड़ दिया। गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी के 'शुक्ळ हंस'' सबद द्वारा बीदा को उपदेश भी दिया था।

सिकन्दर को उपदेश देना एवं उससे हासिम-कासिम को छुड़वाना

दिल्ली में हासिम-कासिम नाम के दो दर्जी रहते थे। दोनों ही गुरु जाम्भोजी के पक्के भक्त थे। वे गुरु जाम्भोजी के बताये हुए नियमों का पालन करते थे। इसी से सिकन्दर लोधी नाराज हो गया था और उसने उनको कैद में डाल दिया था। अपने भक्तों को छुड़वाने के उद्देश्य से गुरु जाम्भोजी अपने शिष्य रणधीर के साथ दिल्ली पहुंचे। यहीं गुरु जाम्भोजी ने सिकन्दर को हक की कमाई खाने का उपदेश दिया था और हासिम-कासिम को छुड़वा लिया था। गुरु जाम्भोजी के उपदेशों से सिकन्दर को ज्ञान हो गया था और वह हक की कमाई पर जीवनयापन करने लग गया था।

शेख सददो से गो-हत्या बन्द करवाना :

गुरु जाम्भोजी अहिंसा के प्रबल समर्थक थे। इसीलिए उन्होंने जीव-हत्या न करने के लिये सबसे अधिक बल दिया था। कर्नाटक के नवाब शेख सद्दो रोज कई गायों को मारकर उनका मांस भूखे लोगों को खिलाता था। इस गो-हत्या

को रोकने के लिए गुरु जाम्भोजी स्वयं शेख सद्दो के पास गये थे। वहीं गुरु जाम्भोजी ने उसे उपदेश दिया और उससे गो-हत्या बन्द करवायी।

रावल जैतसी की प्रार्थना पर जैसलमेर में बिश्नोइयों को बसाना :

गुरु जाम्भोजी की कृपा से जैसलमेर के राजा जैतसी का कुष्ट रोग समाप्त हो गया था। इसी कारण जैतसी उनसे बहुत प्रभावित थे। रावल जैतसी ने जैतसमन्द की प्रतिष्ठा पर एक यज्ञ करवाया था। इस यज्ञ के लिए गुरु जाम्भोजी को भी निमंत्रण दिया था। गुरु जाम्भोजी अपने शिष्यों के साथ जैतसमन्द पहुंचे थे। उसी समय गुरु जाम्भोजी के कहने पर जैतसी ने अहिंसा एवं पशुओं की रक्षा हेतु चार बातें मानने का प्रण किया था। जैतसी की प्रार्थना पर गुरु जाम्भोजी ने जैसलमेर के खरींगा गांव में दो बिश्नोइयों को बसाया था। उसी समय गुरु जाम्भोजी ने एक 'सबद' द्वारा जैतसी को उपदेश दिया था।

राणा-सांगा एवं झाली राणी द्वारा गुरु जाम्भोजी की आज्ञा मानना :

मेवाड़ के राणा सांगा एवं उनकी माता झाली राणी भी गुरु जाम्भोजी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। एक बार पूर्व के कुछ बिश्नोई व्यापारी चित्तौड़ पहुंचे। उन्होंने वहां से कुछ माल का व्यापार किया किन्तु माल पर कर देने से इनकार कर दिया। इस पर सरकारी कर्मचारियों एवं बिश्नोई व्यापारियों में विवाद बढ़ गया। कोई समाधान न निकलने पर राजकर्मचारी उन्हें राजा के पास ले गये। बिश्नोई व्यापारियों ने राणा सांगा एवं झाली राणी को गुरु जाम्भोजी एवं बिश्नोई पंथ के बारे में बताया। झाली राणी ने कहा कि वे सम्भराथळ जाकर गुरु जाम्भोजी से कर देने के बारे में पूछ आये। गुरु जाम्भोजी जो भी आदेश देंगे, वह हमें स्वीकार है। बिश्नोइयों ने सम्भराथळ जाकर गुरु जाम्भोजी को सारी घटना सुनाई। तब गुरु जाम्भोजी ने भेंट स्वरूप राणी के लिए झारी, कंघी, माला, कलश एवं उपदेश के रूप में एक सबद कहा और साथ ही कर माफ करने के लिए कहा।

कहते हैं कि इन वस्तुओं को देखकर राणी को अपना पूर्व जन्म याद आ गया। राणा सांगा ने बिश्नोइयों का चुंगी कर (टैक्स) सदैव के लिए माफ कर दिया। इस तरह राणा सांगा एवं झाली राणी अप्रत्यक्ष रूप से गुरु जाम्भोजी से प्रभावित होकर उनकी आज्ञा का पालन करते रहे हैं।

राजा महाराजाओं के अतिरिक्त गुरु जाम्भोजी ने अनेक साधारण व्यक्तियों को भी उपदेश दिया था। ऐसे व्यक्तियों की संख्या अनगिणत रही है। गुरु जाम्भोजी ने नाथ पंथ के योगियों के पाखण्ड एवं चमत्कार प्रदर्शन को देखकर उन्हें उपदेश दिया था। उनके उपदेशों एवं व्यक्तित्व से प्रभावित होकर नाथ पंथ के कुछ योगी बिश्नोई पंथ में सम्मिलित हो गये थे और शेष, जीवन में सही रास्ते पर चलने लग गये थे। गुरु जाम्भोजी ने अपने उपदेशों द्वारा अनेक लोगों के अहंकार, झूठ, अन्याय, चोरी, पाखण्ड एवं हिंसा आदि अवगुण छुड़वा दिये थे। उनके सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आया, वह उनके उपदेशों से अवश्य ही प्रभावित हुआ था। गुरु जाम्भोजी के उपदेशों के प्रभाव के कारण ही लोग उनकी आज्ञा का पालन करते थे।

निर्वाण-

गुरु जाम्भोजी प्राणी-मात्र का हित करना चाहते थे। इसी कारण वे भटके हुए लोगों को सही मार्ग पर लाने के लिए उपदेश देते रहे हैं। इस तरह लोगों को जीवन की युक्ति और मोक्ष प्राप्ति का उपदेश देते हुए सं. 1593 की मार्ग शीर्ष वदि नवमी को गुरु जाम्भोजी ने लालासर में अपना भौतिक शरीर त्याग दिया था। लालासर बीकानेर से 35 कि.मी. दक्षिण पूर्व में है। कहते हैं कि गुरु जाम्भोजी के बैकुण्ठवास की बात सुनकर अनेक लोगों ने स्वेच्छा से अपने प्राण त्याग दिये थे। गुरु जाम्भोजी के शरीर को उनके शिष्य लालासर से तालवा गांव ले आये। इसी गांव के निकट एकादशी के दिन गुरु जाम्भोजी की बताई हुई निशानी के आधार पर उनके शरीर को समाधिस्थ कर दिया। यहीं पर उनकी समाधी है। अब यह

क्षेत्र ही मुकाम गांव के नाम से प्रसिद्ध है। मुकाम, नोखा से बीस किलोमीटर दूर जयपुर मार्ग पर स्थित है। गुरु जाम्भोजी की समाधी पर उसी समय मन्दिर बना दिया था, जिसे अब (18 फरवरी, 1996) अत्यधिक भव्य बना दिया गया है। यहीं पर समाज के दो मेले लगते हैं – एक फाल्गुन की अमावस्या को एवं दूसरा आसोज की अमावस्या को। इनमें से पहला मेला बड़े मेले के नाम से प्रसिद्ध है। इन मेलों में देश के विभिन्न भागों से लाखों बिश्नोई अपने श्रद्धा-सुमन, अपने इष्ट देव की समाधी पर चढ़ाने आते हैं।

गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी

गुरु जाम्भोजी के 'सबदों' के संग्रह का नाम सबदवाणी है। सबदवाणी को जम्भवाणी भी कहते हैं। गुरु जाम्भोजी ने सात वर्ष की आयु में पहला सबद कहा था। उसके बाद वे निरन्तर लोगों की शंकाओं को दूर करने और ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए सबद कहते रहे हैं। इस समय उनके द्वारा कहे हुए अधिकतम 123 सबद एवं कुछ मंत्र ही प्राप्त होते हैं। गुरु जाम्भोजी के 123 सबद एवं कुछ मंत्र जिस ग्रंथ में है, उसे ही सबदवाणी कहते हैं। इन सबदों को गुरु जाम्भोजी ने 78 वर्षों (सं. 1515 से 1593) में कहा है। गुरु जाम्भोजी के सबदों का उनके जीवन काल में ही एक विशेष राग में बोला जाना प्रारम्भ हो गया था। आज भी हवन के समय उन सबदों का उसी राग में पाठ किया जाता है। हवन के समय एक विशेष लय में बोले जाने के कारण ही ये सबद बहुत वर्षों तक समाज के कंठों में सुरक्षित रहे हैं। आज भी बहुत से लोगों को सबदवाणी के समस्त सबद कंठस्थ हैं। अपनी निश्चित लय में बोले जाने के कारण ही ये सबद श्रोताओं को आनन्द विभोर करते हैं। इसी आनन्द के कारण धीरे-धीरे श्रोता भी इन सबदों को दूसरों के साथ बोलने लगते हैं और बार-बार बोलने से वे उन्हें कंठस्थ हो जाते हैं। सबदवाणी की भाषा राजस्थानी या मरूभाषा है। सबदवाणी के कुछ सबद बड़े और कुछ छोटे हैं।

गुरु जाम्भोजी की शिक्षा

गुरु जाम्भोजी के समय में सभी लोग अपने धर्म के रास्ते से भटक गये थे। चमत्कार प्रदर्शन एवं पाखण्डों का बोल-बाला था। सभी वर्गों के लोग अनेक प्रकार की बुराइयों में जकड़े हुये थे। लोगों का खान-पान एवं आचरण भी पवित्र नहीं था। मदिरा एवं मांस का प्रचलन जोरों पर था। लोग जीव हत्या करते थे और मांस खाते थे। पापमय कर्मों से किसी को भी डर नहीं लगता था। लोग जीवन के सही रास्ते से भटक गये थे। उनके सामने कोई उच्च आदर्श नहीं था। ऐसे बिगड़े एवं अज्ञानता में जकड़े हुए लोगों को गुरु जाम्भोजी ने ज्ञान का प्रकाश दिया था। उन्होंने लोगों के भौतिक जीवन को सुखी बनाने और मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्ति हेतु शिक्षा दी थी। गुरु जाम्भोजी ने लोगों को जीवन के सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया था। उनका उद्देश्य प्राणी मात्र का हित करना था। इसी कारण उनकी शिक्षा किसी वर्ग विशेष के लिए न होकर, प्राणी-मात्र के लिए है। गुरु जाम्भोजी ने मानव समाज को जो शिक्षाएं दी, उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं :

उत्तम कर्म करो :

गुरु जाम्भोजी ने कर्मयुक्त जीवन पर जोर दिया है।यह धरती कर्मभूमि है। यहां प्रत्येक मनुष्य को कर्म करते रहना चाहिए। कर्म रहित जीवन किसी काम का नहीं है। गुरु जाम्भोजी के अनुसार जैसे बिना दाने की भूसी एवं बिना रस के गन्ना बेकार है, उस तरह बिना कर्म किए परिवार निरर्थक हैं। अकर्मण्यता व्यक्ति एवं परिवार दोनों के लिए हानिकारक है। अकर्मण्यता से कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। इसके साथ ही गुरु जाम्भोजी ने बताया है कि मनुष्य को सदैव उत्तम कर्म करने चाहिए। जो कर्म लोक मंगलकारी एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं, वे ही उत्तम कर्म हैं। अच्छे कर्म कभी भी व्यर्थ नहीं जाते। उत्तम कर्मों से ही मनुष्य का भौतिक जीवन सुखी बनता है। उत्तम कर्म ही मोक्ष प्राप्ति में सहायता करते हैं। अत: मनुष्य को निष्काम भाव से उत्तम कर्म करते रहना चाहिए। प्रत्येक कर्म

करते समय मनुष्य को न्याय एवं ईमानदारी का पालन करना चाहिए और सन्तोष को धारण करना चाहिए। उत्तम कर्मों के लिए मनुष्य को अच्छी संगति करनी चाहिए। अच्छी संगति के प्रभाव से ही मनुष्य में अच्छे कर्म करने की आदत पड़ सकती है। भौतिक जीवन में मनुष्य को अपनी समझ एवं शक्ति के अनुसार उत्तम कर्म करने चाहिए। सांसारिक काम के लिए दूसरों का अन्धानुकरण करना व्यर्थ है। अच्छे कर्म करते समय यदि कोई कष्ट आता है तो मनुष्य को उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। मानव जीवन क्षणिक है। अत: उसे जो भी अच्छे कर्म करने हैं, उन्हें मृत्यु से पूर्व कर लेना चाहिए, नहीं तो उसे पछताना पड़ेगा।

जैसा कर्म वैसा फल :

गुरु जाम्भोजी के अनुसार फल की प्राप्ति कर्मों के अनुसार होती है। अच्छे कर्मों के फल से ही जीव को मानव योनि प्राप्त होती है और मानव जीवन में किये गये कर्मों का फल मृत्यु के उपरान्त भोगना पड़ता है। उत्तम कर्म करने वाले को मोक्ष की प्राप्ति होती है और बुरे कर्म करने वाले को चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। मृत्यु के बाद मनुष्य के अच्छे कर्म ही उसकी सहायता करते हैं। इस तरह गुरु जाम्भोजी ने पुनर्जन्म में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया है। उनके अनुसार मनुष्य की यह आदत है कि वह कर्म तो स्वयं बुरा करता है और उसके अनुसार मिलने वाले बुरे फल के लिए ईश्वर को दोष देता है। इसके साथ ही जाम्भोजी ने यह भी बताया है कि यह संसार सभी प्रकार के सुख के साधनों से युक्त है। मनुष्य अपनी बुद्धि एवं परिश्रम से प्रत्येक सुख को प्रात कर सकता है। सुख के इतने साधन होने के बाद भी यदि कोई व्यक्ति इच्छित वस्तु से वंचित रहता है और दु:खी होता है, तो वह दु:खी होने योग्य ही है।

कथनी एवं करनी में समानता :

गुरु जाम्भोजी ने बताया है कि मनुष्य की कथनी एवं करनी में समानता होनी चाहिए। इसीलिए मनुष्य को पहले स्वयं किसी काम को करना चाहिए और

फिर उसे दूसरों को करने के लिए कहना चाहिए। बिना किसी काम को किये हुए केवल दूसरों को उपदेश देना व्यर्थ है। ऐसे उपदेश प्रभावहीन रहते हैं।

स्वच्छता पर बल :

गुरु जाम्भोजी ने तन-मन एवं आचरण की पवित्रता पर बल दिया है। इसी कारण उन्होंने सभी प्रकार के दान से स्नान को अधिक महत्त्व दिया हैं। मनुष्य अपने शरीर से ही भौतिक सुख प्राप्त करता है और शरीर के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करता है। इसलिए शरीर को स्नान द्वारा स्वच्छ रखना आवश्यक है। संयम रखना और उत्तम कर्म करना, मन एवं आचरण की पवित्रता है। तन-मन एवं आचरण से पवित्र रहने वाला व्यक्ति ही इस संसार में प्रसन्नचित रह सकता है। गुरु जाम्भोजी ने बताया है कि प्रत्येक मनुष्य को कर्ण, दधीचि, शिवि, राजा बलि एवं श्रीराम की तरह तन-मन एवं आचरण की पवित्रता का पालन करना चाहिए। तन-मन से अपवित्र व्यक्ति भूचाल की तरह दिशाहीन भटकता है। अपवित्र मनुष्य को यमपुर में भी सजा भोगनी पड़ती है। अज्ञानता के कारण कुछ मनुष्य अपने हाथ-पांव भी नहीं धोते। ऐसे मनुष्य संसार में कष्ट भोगते रहते हैं।

परोपकार करो एवं दान दो :

मनुष्य को अपने विकास के साथ-साथ समाज के उत्थान के लिए परोपकार करना चाहिए। गुरु जाम्भोजी के अनुसार मनुष्य को बादलों के समान दूसरों का भला करना चाहिए। परोपकार के उद्देश्य से मनुष्य को यथाशक्ति दान देना चाहिए। दान सदैव सुपात्र को देना चाहिए। सुपात्र को दिया हुआ दान ही सुफल देता है। कुपात्र को दिया हुआ दान तो व्यर्थ ही जाता है। दान सदैव निष्काम भाव से देना चाहिए। निष्काम भाव से दिया हुआ दान ही मनुष्य को आवागमन से मुक्ति दिलाता है। परोपकार एवं दान से ही मनुष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त हो सकता है।

दुविधा वृत्ति का त्याग करो :

गुरु जाम्भोजी के अनुसार दुविधा वृत्ति के त्याग एवं एकाग्र मन से किसी भी काम में सफलता प्राप्त की जा सकती है। एकाग्र मन एवं अभ्यास के द्वारा कठिन से कठिन काम को भी सरल बनाया जा सकता है। दुविधा में जकड़े रहने के कारण सरल से सरल काम भी नहीं हो सकता। इसके लिए गुरु जाम्भोजी ने अनेक उदाहरण दिये हैं। जैसे दुविधा वृत्ति से न तो बात कही जा सकती है और न ही किसी की बात सुनी जा सकती है।

हक की कमाई खाओ :

गुरु जाम्भोजी ने परिश्रम के महत्त्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि मनुष्य को परिश्रम करना चाहिए। उसे सदैव हक की कमाई खानी चाहिए। हक की कमाई खाने के लिए यह भी आवश्यक है कि मनुष्य सादगी से रहे और जो कुछ रूखा-सूखा मिल जाय, उससे सन्तोष धारण करें। उसे सदैव मोटा ओढ़ना-पहनना चाहिए एवं सादे भोजन से सन्तुष्ट रहना चाहिए। सादगी एवं सन्तोष के अभाव में मनुष्य अन्याय एवं बेईमानी का सहारा लेगा। ऐसा करने से उसका जीवन कष्टमय बन जायेगा और मानव जीवन व्यर्थ ही नष्ट हो जायेगा।

जीवों पर दया करो और हरे वृक्ष मत काटो :

गुरु जाम्भोजी प्राणी मात्र के हितैषी थे। इसीलिए उन्होंने जीव-हत्या का प्रबल विरोध किया है। उनके अनुसार जो पशु दिन भर जंगल में घास चर कर शाम को सहज रूप से दूध देते हैं, उनका दूध पीना उचित है किन्तु उनके गले पर छुरी चलाना अनुचित है। जीव हत्या करने वाले ज्ञानी मनुष्यों को गुरु जाम्भोजी ने अज्ञानी माना है। उनके अनुसार संसार के सभी प्राणियों को पीड़ा की अनुभूति एक जैसी होती है पर मूक प्राणी अपनी पीड़ा अभिव्यक्त नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में मनुष्य को उनकी हत्या नहीं करनी चाहिए। मनुष्य स्वयं तो कांटे की

पीड़ा भी सहन नहीं कर सकता और मूक पशुओं का सिर काट कर उन्हें असहनीय पीड़ा पहुंचाता है, जो अनुचित है। गुरु जाम्भोजी के अनुसार जो जीव-हत्या करते हैं, उनका अन्तिम समय बहुत ही दु:खदायी होगा।मनुष्य अपने शरीर के पालन-पोषण हेतु दूसरे प्राणियों की हत्या करता है, वह अनुचित है। ऐसे कर्म करने वाले को अवश्य ही नरक की प्राप्ति होती है। गो-वध करने वालों को गुरु जाम्भोजी ने अनेक तर्कों द्वारा समझाते हुए बताया है कि गो-वध करना उचित होता तो क्यों राम गायों को दान में देते, क्यों कृष्ण तथा करीम उन्हें जंगल में चराते ? गुरु जाम्भोजी के अनुसार सभी जीवों में परमात्मा का अंश, आत्मा रूप में निवास है। इसी कारण ईश्वर को सभी जीव समान रूप से प्रिय हैं। ऐसी स्थिति में जब मनुष्य एक ओर ईश्वर प्रिय प्राणियों का वध करता है और दूसरी ओर ईश्वर का नाम स्मरण करता है, तो इससे कोई लाभ नहीं है। ऐसे मनुष्य से ईश्वर कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकते। गुरु जाम्भोजी ने जीव हत्या न करने के संबंध में केवल उपदेश ही नहीं दिया अपितु उन्होंने अनेक राजा-महाराजाओं से मिलकर गो-हत्या न करने की प्रतिज्ञा करवायी थी।

आज की तरह गुरु जाम्भोजी के समय में पर्यावरण प्रदूषण की कोई समस्या नहीं थी, फिर भी उन्होंने आने वाले समय की भयंकरता को जानते हुए, पर्यावरण सन्तुलन का सरल उपाय बताया है। पर्यावरण संरक्षण के लिए उन्होंने जीवों पर दया करने और हरे वृक्षों को न काटने पर बल दिया है। वृक्ष-प्रेम की भावना के प्रचार के लिए उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक स्थानों पर वृक्षारोपण किया था। उनके द्वारा लगाये गये वृक्ष आज भी राजस्थान नागौर, राजस्थान के रोटू गांव में और उत्तर प्रदेश के लोदीपुर में सुरक्षित हैं, जहां समाज के मेले लगते हैं।

आडम्बर एवं पाखण्डों से दूर रहो :

गुरु जाम्भोजी ने मानव कल्याण हेतु जो रास्ता बताया है, वह सीधा एवं सरल है। उसमें आडम्बर एवं पाखण्ड के लिए कोई स्थान नहीं है। इसी कारण उन्होंने सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में व्याप्त आडम्बरों एवं पाखण्डों का विरोध किया है। आडम्बर एवं पाखण्ड के लिए उन्होंने किसी को भी क्षमा नहीं किया है। योग के नाम पर किये जाने वाले पाखण्डों का विरोध करते हुए उन्होंने कहा है कि जटा बढ़ाना, सिर मुंडाना या नंगा रहना योग नहीं है। योग तो निराकार ब्रह्म को जानना है। ब्रह्म को जाने बिना यह सब कुछ करना केवल दिखावा है।

इसी तरह उन्होंने हिन्दुओं द्वारा की जाने वाली मूर्ति पूजा का विरोध किया है। उनके अनुसार मनुष्य स्वयं मूर्ति बनाता है, उसे कपड़े पहनाता है और स्वयं ही उसके आगे झुकता है, यह कितना बड़ा अन्याय एवं पाखण्ड है। मूर्ति की निरर्थकता बताते हुए उन्होंने कहा है कि इससे तो कुत्ता अच्छा है, जो घर की रखवाली करता है। तीर्थ यात्राओं के लिए जगह-जगह भटकना भी दिखावा मात्र है। मनुष्य के हृदय में ही अड़सठ तीर्थ हैं। लेकिन अज्ञानता के कारण मनुष्य अपने हृदय में स्थित तीर्थों में स्नान नहीं कर सकता। मुसलमानों द्वारा जीव-हत्या करना और हज की यात्रा करने का विरोध करते हुए गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि यदि तुम्हारा मन सच्चा है तो हज एवं काबा तुम्हारे पास ही है। जीव हत्या करके तुम अपने लिए नरक का रास्ता तैयार कर रहे हो। मुसलमानों द्वारा मस्जिद पर चढ़कर बांग देने को भी उन्होंने पाखण्ड ही माना है। उनके अनुसार अपने कर्त्तव्य को पहचाने बिना ईश्वर को जोर-जोर से पुकारना दिखावा मात्र है। नीच कर्म करने वाले मुसलमान द्वारा नमाज पढ़ना भी व्यर्थ है।

कलावन्तों से सावधान रहो :

तंत्र-मंत्र द्वारा दूसरों को चमत्कृत करना तथा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के

लिए लोगों को गलत रास्ते पर ले जाने वालों को गुरु जाम्भोजी ने कलावन्त कहा है। ऐसे कलावन्तों की कला किसी भी प्रकार से लाभदायक नहीं हो सकती। गुरु जाम्भोजी ने ऐसे कलावन्तों से सावधान रहने के लिए कहा है। ऐसे कलावन्त आध्यात्मिक विद्या के नाम पर लोगों को ठगते हैं और अपना पेट पालते हैं। उनकी यह विद्या लोगों को जीवन के सही रास्ते से दूर करती है। इसलिए ऐसे कलावन्तों से हर समय सावधान रहना ही लाभदायक होता है।

समानता पर बल :

गुरु जाम्भोजी मानव की समानता के समर्थक रहे हैं। उनके अनुसार सभी मनुष्यों का शरीर एक जैसा है सब में एक जैसा ही मांस हैं और एक ही प्रकार का सांस सब में प्रवाहित होता है। इतनी समानता होने के बाद किसी को उत्तम एवं किसी को नीच समझना मूर्खता है। जो मनुष्य आपसी भेद-भाव को समाप्त नहीं कर सकता, वह कभी भी स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सकता। इतना ही नहीं गुरु जाम्भोजी ने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भी बल दिया है। इसी दृष्टि से उन्होंने स्वयं के बारे में बताया है कि वे सच्चे हिन्दुओं के देव हैं और सच्चे मुसलमानों के पीर हैं।

मूल को सींचो :

गुरु जाम्भोजी ने भौतिक जीवन की सफलता तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए मूल को सींचने पर बल दिया है। उनके अनुसार वृक्ष की जड़ों में पानी देने से ही वृक्ष हरा रहता है और संसार को छाया देता है। पत्तों एवं टहनियों पर पानी डालना मूर्खता है। इससे कुछ भी लाभ नहीं है। इसी तरह सही समय एवं उचित साधनों के प्रयोग से ही मनुष्य भौतिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। इसी कारण गुरु जाम्भोजी ने बिना सोचे समझे काम करने का बार-बार विरोध किया है। जिस वस्तु में कोई सार नहीं है, उससे कुछ प्राप्त करने का प्रयास करना व्यर्थ

है। उन्होंने बार-बार कहा है कि अनाज के दानों से रहित भूसी को पीसना मूर्खता है। भौतिक जीवन की सफलता के साथ ही उन्होंने मोक्ष प्राप्ति के लिए भी मूल को सींचने पर बल दिया है। इस दृष्टि से गुरु जाम्भोजी ने हिन्दुओं, मुसलमानों, योगियों एवं विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना करने वालों को अपने-अपने ध र्म के मूल रूप को जानने पर बल दिया है। धर्म के मूल रूप को जाने बिना कुछ भी करना मूर्खता है।

विष्णु का जप करो :

मोक्ष प्राप्ति हेतु गुरु जाम्भोजी ने बार-बार विष्णु के नाम को जपने के लिए कहा है। मोक्ष प्राप्ति के लिए इससे कोई सरल एवं सीधा रास्ता नहीं हो सकता। उन्होंने विष्णु के नाम का जप करने वालों को मोक्ष प्राप्ति की गारन्टी तक दी है। जो व्यक्ति पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से विष्णु का जप करता है, उसे मोक्ष-प्राप्ति निश्चित है। गुरु जाम्भोजी ने जहां विष्णु जप के लाभ बताये हैं, वहीं विष्णु का जप न करने से उत्पन्न दु:खों का भी वर्णन किया है। विष्णु का जप न करने से मनुष्य अगले जन्म में काली-कुरूप देह धारण करता है। वह बुरी से बुरी योनियों में जन्म धारण करके कष्ट भोगता रहता है।

विष्णु का जप न करने वाला अन्धेरे नरक में वास करता है और उसे स्वर्ग की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। स्वर्ग की प्राप्ति न होना एवं नरक की प्राप्ति होने में भी विष्णु का कोई दोष नहीं है। मनुष्य स्वयं जैसा कर्म करता है, उसको वैसा ही फल मिलता है। इस तरह गुरु जाम्भोजी ने अनेक उदाहरणों द्वारा विष्णु जप के महत्त्व को प्रकट किया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि जिसने विष्णु का जप नहीं किया, उसका मानव जीवन व्यर्थ है और इसमें उसका प्रत्येक सांस कसूरवार है।

सांसारिक जीवन क्षणभंगुर है :

गुरु जाम्भोजी के अनुसार सांसारिक जीवन एवं सांसारिक संबंध क्षणिक

एवं सारहीन है। इसी कारण मनुष्य को इनमें तल्लीन नहीं होना चाहिए। मानव शरीर भी नाशवान है। यह किसी भी समय बिखर सकता है। अतः इस पर अहंकार करना मूर्खता है। इस संसार में रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को कष्ट सहन करने पड़ते हैं। इसलिए कष्टों को देखकर मनुष्य को न तो घबराना चाहिए और न ही अपने उद्देश्य से विचलित होना चाहिए। संसार में रहने वाले मनुष्य की आयु क्षण-क्षण घटती जा रही है। अतः मनुष्य को जो भी उत्तम कर्म करने हैं, उन्हें शरीर में शक्ति रहते हुए शीघ्र कर लेने चाहिए, नहीं तो उसे पछताना पड़ेगा। इसी कारण प्राणी को मानव जीवन पाकर, उसका एक क्षण भी व्यर्थ नहीं खोना चाहिए। मानव जीवन में उसे सदैव जागरूक एवं परिश्रमी रहना चाहिए, जिससे उसका मानव जीवन सफल हो सके।

यह संसार गोवळवास है :

मनुष्य को यह मानकर चलना चाहिए कि यह संसार मनुष्य का वास्तविक घर नहीं है। यहां का निवास अस्थायी है। सांसारिक निवास को गुरु जाम्भोजी ने ''गोवळवास'' बताया है। मारवाड़ में अकाल के समय लोग अपने-अपने पशुओं को लेकर अत्यधिक घास एवं पानी वाले स्थान पर जाते हैं। ऐसे स्थानों पर लोग तब तक रहते हैं, जब तक उनके गांव में सुकाल न हो जाय। अकाल पड़ने पर जब लोग अपने पशुओं को लेकर दूसरे गांव में जाकर रहते हैं, तो इसे गोवळवास कहते हैं। गोवलवास की अवधि अनिश्चित होती है। सुकाल होने पर लोग अपने असली घर में लौट आते हैं। इसी तरह मनुष्य का असली घर तो आगे है, जहां पहुंचने पर मनुष्य आवागमन से मुक्त हो जाता है। इसलिए मनुष्य को इस संसार में रहते समय सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए। मानव जीवन द्वारा ही प्राणी अच्छे कर्म कर सकता है और आवागमन से मुक्त हो सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर मनुष्य को इस संसार की चमक-दमक में तल्लीन नहीं होना चाहिए,

अपितु इस संसार को सारहीन समझकर सदैव अच्छे कर्म करके मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

गीता की प्रशंसा :

गुरु जाम्भोजी के अनुसार मनुष्य के लिए कर्म-फल का भोग करना आवश्यक है। इसीलिए मनुष्य को सदैव निष्काम भाव से उत्तम कर्म करने चाहिए। निष्काम कर्म करने एवं कर्म के अनुसार फल मिलने की बात भी श्रीकृष्ण ने गीता में कही है। इसी कारण गुरु जाम्भोजी ने गीता की प्रशंसा की है। गुरु जाम्भोजी के अनुसार जिस तरह फिटकरी गंदे पानी को साफ कर देती है, उसी तरह गीता का ज्ञान भी मन के मैल को साफ कर देता है। गीता-ज्ञान से मनुष्य के सभी भ्रम समाप्त हो जाते हैं।

गुरु जाम्भोजी ने भौतिक जीवन के सुख के लिए एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु जितनी बातें कही हैं, वे सब व्यवहारिक, सरल एवं सच्ची हैं। उन्होंने सादगी, परोपकार, अच्छी संगति, एकनिष्ठभाव, परिश्रम, दया, धर्म, शील, सन्तोष, पवित्रता, नम्रता, क्षमा, सत्य एवं ईमान आदि गुणों का समर्थन किया है। वाद-विवाद, दुविधा, अहं, पाखण्ड, भेद-भाव, झूठ एवं क्रोध आदि का विरोध किया है। उन्होंने जो कुछ कहा है, वह मानव-मात्र के लिए है, किसी वर्ग या जाति विशेष के लिए नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने जो कुछ कहा है, वह सम्पूर्ण जीवन को दृष्टिगत रखकर कहा है। इसलिए उनकी शिक्षा पूर्ण एवं व्यवहारिक होने के साथ-साथ सभी कालों में समान रूप से प्रभावशाली रहने वाली है।

-0-0-0-

पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या इस समय संसार के सामने एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। इसके सम्बन्ध में पूरा विश्व चिन्तित है और इस समस्या के समाधान के लिए प्रयत्नशील है। इस समस्या ने मानव जीवन के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इस समस्या पर काबू पाना आवश्यक है। इसी कारण विश्व के सभी देश इस समस्या पर विचार-विमर्श कर रहे हैं और मुक्ति का रास्ता ढूंढ रहे हैं। पर्यावरण -प्रदूषण की समस्या का समाधान वृक्षों के माध्यम से हो सकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर आज न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व के अन्य देश भी बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण कर रहे हैं। आज, जब विश्व में पर्यावरण-प्रदूषण का खतरा बढ़ रहा है तो हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता गुरु जाम्भोजी की शिक्षा तथा बिश्नोई समाज द्वारा वन्य जीवों एवं वृक्ष-रक्षा हेतु किये गये बलिदानों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

गुरु जाम्भोजी ने अपने समय के भयंकर अकाल देखे थे। अकाल के कारण मनुष्य को बेघर होना पड़ता है और पशुधन की भी हानि होती है। कई बार तो भयंकर अकाल के कारण मनुष्य को अपने प्राणों से भी हाथ धोने पड़ते हैं। अकाल की भयंकरता को देखकर ही गुरु जाम्भोजी ने ऐसे उपाय किये थे, जिससे मनुष्य को अकाल का सामना न करना पड़े। अकाल की समाप्ति हेतु उन्होंने एक ओर वृक्षारोपण पर बल दिया था और दूसरा हरे वृक्ष न काटने का नियम बनाया था। अकाल का स्थायी समाधान इन्हीं दोनों उपायों से हो सकता है। आज भी यदि हम इन उपायों को अपना लें तो अकाल जैसी भयंकर समस्या

से मुक्ति मिल सकती है।

गुरु जाम्भोजी के समय में अकाल की समस्या अवश्य थी पर आज की तरह पर्यावरण प्रदूषण की कोई समस्या नहीं थी। फिर भी उन्होंने इस बात को अनुभव किया था कि मानव के विकास एवं अस्तित्व के लिए प्रकृति के विभिन्न आयामों में सन्तुलन रहना आवश्यक है। प्रकृति के प्रमुख तीन घटक हैं – मनुष्य, वनस्पति एवं मानवेत्तर प्राणी। इन तीनों में मनुष्य अपनी रक्षा करने में स्वयं सक्षम है और अन्य दोनों की रक्षा मानव की इच्छा–शक्ति पर निर्भर है।मनुष्य का हित दोनों को सुरक्षित रखने में है। इन तीनों की सुरक्षा से प्रकृति के विभिन्न आयामों में सन्तुलन रह सकता है और पर्यावरण शुद्ध रह सकता है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर गुरु जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों को पर्यावरण संरक्षण हेतु जो मूल मंत्र दिया था, वह है – जीव दया पालणी अर् रूंख लीलो नहीं घावै, अर्थात् जीवों पर दया करो तथा हरे वृक्ष मत काटो। गुरु जाम्भोजी ने अपनी सबदवाणी में हिंसा के विरोध में अनेक तर्क देकर जीव दया का समर्थन किया है। ईंधन के साथ विभिन्न जीवों के जलने से भी हिंसा होती है और प्रदूषण फैलता है। इसीलिए गुरु जाम्भोजी ने ईंधन को भी अच्छी तरह झाड़ कर काम में लेने पर बल दिया है। गुरु जाम्भोजी द्वारा बताया गया यह नियम भी पर्यावरण को शुद्ध रखने में अत्यन्त सहायक रहा है। हवन के द्वारा पर्यावरण शुद्ध रहता है। इस बात को आज के वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। हवन का धुआं जब वातावरण में फैलता है, तो इससे वातावरण में व्याप्त प्रदूषण समाप्त हो जाता है। ''होम हित चित प्रीत सूं होय'' अर्थात् नित्य प्रेम पूर्वक हवन करो। हवन करना भी गुरु जाम्भोजी द्वारा बताये गये नियमों में से एक है।

मानव एवं वृक्ष का गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्षों पर निर्भर रहता है। उसके जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण कार्य वृक्षों की सहायता से पूरे

होते हैं। वृक्षों के बिना मानव का जीवन अधूरा है। यहां तक कि वृक्षों के बिना मनुष्य का जीवित रहना भी कठिन है। वृक्षों के इसी महत्त्व को देखकर गुरु जाम्भोजी ने वृक्ष-प्रेम की भावना पर बल दिया था। वृक्ष-प्रेम की भावना के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से ही उन्होंने भ्रमण करते समय स्थान-स्थान पर खेजड़ी के वृक्ष लगाये थे। वृक्षों की रक्षा के उद्देश्य से ही गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में वृक्ष काटने का विरोध किया है।

वृक्ष-प्रेम की भावना का जो प्रचार-प्रसार गुरु जाम्भोजी ने किया था, उसका उनके अनुयायियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। वृक्ष-प्रेम की भावना के कारण ही लोग न तो स्वयं हरा वृक्ष काटते थे और न दूसरों को काटने देते थे। ''सिर सांटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण'' को बिश्नोई समाज ने अपने जीवन का आदर्श मान लिया था। इसी कारण वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण-न्यौछावर करने की अनेक घटनाएं बिश्नोई इतिहास में देखी जा सकती हैं। बिश्नोई इतिहास के अतिरिक्त ऐसी एक भी घटना विश्व इतिहास में नहीं मिलती। वृक्षों की रक्षा हेतु प्राण न्यौछावर करने की प्रथम घटना जोधपुर राज्य के रामासड़ी गांव की है। सम्वत् 1661 में जेठ वदि दूज शनिवार को श्रीमती करमां एवं श्रीमती गौरां बिश्नोई ने खेजड़ी की रक्षा हेतु रामासड़ी गांव के चौराहे पर स्वेच्छा से अपने सिर सौंप दिये थे। उनके इस बलिदान को देखकर वृक्ष काटने वाले कांप उठे। उन्होंने तुरन्त वृक्ष काटने बंद कर दिये। इस बलिदान से बहे रक्त के छींटे अभी सूख भी नहीं पाये थे कि तिलासणी गांव की श्रीमती खीवणी खोखर, श्रीमोटा जी खोखर एवं श्रीमती नेतू नैण ने वृक्षों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

वृक्ष प्रेम की भावना एवं त्याग की इन घटनाओं का समाज पर बहुत

गहरा प्रभाव पड़ा। लोग बिश्नोई गांवों के आस-पास वृक्ष काटने से डरने लग गये थे। इसी से जन साधारण ने बिश्नोई गांवों के आस-पास वृक्ष काटने बंद कर दिये थे पर शासक वर्ग अपने अहं के कारण बिश्नोई गांवों के आस-पास वृक्ष काटने का असफल प्रयास करता रहा है। यही कारण है कि तिलासणी बलिदान की चर्चा के शान्त होने से पूर्व ही सम्वत् 1700 में चैत्र वदि तीज को मेड़ता परगने के पोलावास गांव के बूचो जी ऐचरा ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने की रोमांचकारी एवं विश्व प्रसिद्ध घटना 'खेजड़ली बलिदान' की है। यह घटना जोधपुर से 25 कि.मी. दूर खेजड़ली गांव में घटित हुई थी। सम्वत् 1787 की भादो सुदि दशमी, मंगलवार को बिश्नोइयों के चौरासी गांवों के 363 स्त्री, पुरूषों ने वृक्षों से चिपक कर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। इस बलिदान की सूचना जब राजा के पास पहुंची तो उन्होंने इसी दिन वृक्षों की कटवाई रूकवा दी। इस घटना की समाप्ति भी इसी दिन हो गई थी।

मरूप्रदेश की तुलसी कही जाने वाली खेजड़ी, जो आज सुरक्षित है ,उसका श्रेय उन बिश्नोई शहीदों को है, जिन्होंने गुरु जाम्भोजी की शिक्षा से प्रेरित होकर इसकी रक्षा के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। त्रिकाल ज्ञाता गुरु जाम्भोजी ने खेजड़ी के महत्व को समझकर ही स्थान-स्थान पर खेजड़ी के वृक्ष लगाये थे। मरू प्रदेश के पर्यावरण संरक्षण में खेजड़ी का अत्यधिक योगदान है। इस तरह अपने जीवन का बलिदान देकर बिश्नोइयों ने पर्यावरण संरक्षण में जो योगदान दिया है, उसका सारा श्रेय गुरु जाम्भोजी को है।

पर्यावरण संरक्षण के जो-जो उपाय गुरु जाम्भोजी ने बताये हैं, वे पूर्ण

वैज्ञानिक हैं। इन उपायों द्वारा आज भी पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को हल किया जा सकता है। इसी आधार पर गुरु जाम्भोजी को पर्यावरण संरक्षण का प्रणेता माना जाता है।

वृक्षों की रक्षा हेतु जो ''चिपको आन्दोलन'' उत्तराखण्ड में चल रहा था, उसका जन्म भी उसी दिन हो गया था, जिस दिन बिश्नोई स्त्री-पुरूषों ने वृक्षों से चिपक कर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। आधुनिक ''चिपको आंदोलन'' बिश्नोई समाज द्वारा प्रारम्भ किये गये चिपको आन्दोलन की एक कड़ी ही है। गुरु जाम्भोजी ही इस आन्दोलन के प्रेरक रहे हैं।

-0-0-0-

उत्तम कुली का उत्तम न होयबा।
कारण किरिया सारूं।। (सबदवाणी - 26)

उत्तम कुल में उत्पन्न होने वाला प्रत्येक व्यक्ति श्रेष्ठ नहीं हो सकता। मनुष्य के कार्यों के अनुसार ही कारण बनते हैं अर्थात् श्रेष्ठ कार्यों से ही मनुष्य श्रेष्ठ बन सकता है।

पहले किरिया आप कमाइये।
तो औरा न फरमाइये।। (सबदवाणी - 30)

पहले स्वयं किसी काम को करना चाहिए और फिर किसी दूसरे को उसे करने के लिए कहना चाहिए।

विष्णु न दोष किसो रे प्राणी।
तेरी करणी का उपकारूं।। *(सबदवाणी - 3)*

अपने जीवन में प्राप्त होने वाले फल के लिए विष्णु को दोष देना व्यर्थ है। मनुष्य को सदैव अपने कर्मों का ही फल प्राप्त होता है।